भीष्म साहनी की कहानी , "मुर्ग मुस्सलम"

यामाहाता रिनईची

मैंने मुर्ग मुस्सलम नामक भीष्म साहनी की रचना को पढ़ा। हिंदी साहित्य संसार के कई विशिष्ट रूप हैं। साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है।हमारे सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक हालात,लोगों के दैनिक जीवन के संघर्ष से संबंधित है।वे सभी साहित्य में प्रतिबिंबित होते हैं।
आज भी अधिकांश भारतीय लोग गावाँ में रहते हैं, आधुनिक हिंदी लेखक भीष्म साहनी ने उनसे जुड़ते हुए,उन क्षेत्रों में रहनेवाले लोगों के आनंद , दु:ख और उनकी समस्थाओं को विषय बनाकर रचनाएँ की है।उन्होंने आधुनिकीकरण या विकास के नाम पर फैले कपट और पाखंड का भी वर्णन किया हैं।

भीष्म साहनी की मुर्ग मुस्सलम में नायक को राजनीतिक अपराधी के रूप में तीन महिने तक जेल में डाला गया।उस जेल में एक असरदार राजनीतिक नेता का बेटा भी क़ैद था।जेल में सादा खाना खाने के कारण वह परेशान था,इसलिए नायक ने चिकन जैसा अंग्रेज़ी खाने की युकित के लिए हड़ताल की और जेलर को उस राजनीतिक नेता के बेटे का परिचय दिया।फिर,तीन महिने तक हर दिन सभी अपराधी जेल में दावत खाते रहे।जेल से छूटने के बाद नायक ने दावत के घटनाक्रम को जाहिर कर दिया।परिणाम यह हुआ बेगुनाह रसोइया गिरफ़्तार हुआ और जेल में ज़बरदस्ती रसोइए से खाना बनवाया गया।

नायक ने अपनी हाज़िरजवाबी के द्वारा उन दिनों के भारतीय समाज़ मार्मिक रूप से वर्णन किया है।पुलिस और नेता के बीच में अनुचित गँठबंधन या उनकी राजनीतिक चाल से कई लोगों की ज़िंदगी खराब होती है और उसमें चारों ओर के लोग उलझते

है।यह तथ्य इस कहानी में प्रकट हुआ है। इस कहानी में उन दिनों के सामाजिक हालात भी प्रतिबिंबित हुए हैं।

कहानी पढ़कर मुझे यह स्पष्ट हो गया कि साहित्य समाज का दर्पण है।